Impact Factor (SJIF): 6.092 E-ISSN: 2583-1615

International Journal of Research in Academic World

Received: 15/October/2023 IJRAW: 2023; 2(11):16-20 Accepted: 19/November/2023

श्री गंगानगर जिले के माध्यमिक स्तर के राजकीय व गैर राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा संचालित पाठयक्रम के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

*[1]पूनम शर्मा

*[1]शोधार्थी, शिक्षा विभाग, टाँटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर, राजस्थान, भारत।

सारांश

राजकीय व गैर राजकीय विद्यालयों के अध्यापकों के एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा संचालित पाठयक्रम के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन का अवसर प्राप्त होता है। सरकार इन संस्थाओं के उचित विकास की अनेक योजनाएं बना रही है, ताकि स्तर में गुणवत्ता लायी जा सके। विकास की अनेक योजनाओं को लागू कर उनके स्तर में उचित गुणवत्ता लायी जा सकेगी। राजकीय व निजी स्तर पर संचालित विद्यालयों के अध्यापकों की शिक्षण संबंधी अभिक्षमताओं, व्यावसायिक मूल्यों में वृद्धि से नवीन ज्ञान को सीखने में मदद मिलेगी, जिससे नए ज्ञान के प्रयोग से विद्यालयों में शिक्षण संबन्धी व प्रशासनिक कार्य करने में आसानी हो सकेगी। विद्यालय का भौतिक व अकादमिक वातावरण वहां कार्य कर रहे शिक्षकों की मानसिकता, शिक्षण संबंधी अभिक्षमताओं, व्यावसायिक मूल्यों पर निर्भर करता है। इस अध्ययन के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुझावों से इस स्थिति में सुधार होगा, जिसका प्रत्यक्षत् लाभ इनमें कार्य करने वाले शिक्षकों को मिल सकेगा। बालकों को गृह कार्य पूर्ण करवाने, नवीन जानकारी देने में अभिभावकों की अहम भूमिका होती है। अतः यह अध्ययन अध्यापकों के अलावा अभिभावकों में भी अध्ययन आदतें विकसित करने में सहयोग कर सकेगा। इस अध्ययन से उनके सामाजिक व शैक्षिक उन्नयन का मार्ग प्रशस्त होगा, जिससे वे समाज में अपना स्तर कायम रखने में सफल होंगे तथा अपनी निर्बलता दूर करेंगे। इस अध्ययन के माध्यम से राज्य तथा केन्द्रीय सरकार को उनके द्वारा चलाई जा रही उत्थान योजनाओं के परिलाभों की जानकारी प्राप्त होगी और प्रत्येक अध्यापक इसके प्रति रुचि ले सकेगा।

मुख्य शब्दः शिक्षक, पाठयक्रम, अभिवृत्ति

प्रस्तावना

प्राचीन समय में शिक्षा के तीन अंग माने गये थे–शिक्षक, शिष्य व वेद। आधुनिक समय में शिक्षा ने उल्का की तरह विकास कर मानव को एक योग्य नागरिक बनने में सहायता प्रदान की जैसे–जैसे समय के साथ शिक्षा की टहनियां शाखाएं विकसित होती गई मजबूत स्तम्भ के रूप में शिक्षा विकसित हुई।

आगे चलकर शिक्षा तीन स्तरों प्रदान की जाने लगी प्राथमिक स्तर, माध्यमिक स्तर तथा उच्च स्तर। आज शिक्षा के तीनों स्तर महत्वपूर्ण है अर्थात् प्राथमिक स्तर किसी पेड़ की जड़ है, तो उच्च शिक्षा उसकी टहनियां तथा पत्ते है। इसी के मध्य माध्यमिक शिक्षा पेड़ का तना है जो कि जड़ व टहनियों को जोड़ता है, यदि किसी भी पेड़ का तना कमजोर होगा तो वह ज्यादा दिनों तक अस्तित्व में नहीं रह सकेगा अर्थात पेड़ के तने का मजबूत होना आवश्यक है। इसलिए कहा जाता है कि माध्यमिक शिक्षा, कि प्राथमिक शिक्षा तथा उच्च शिक्षा के मध्य तने का कार्य करती है, को प्रभावी एवं महत्वपर्ण होना आवश्यक है। इसके लिए इसके पाठयक्रम को प्रभावी होना आवश्यक है।

हमारे देश में शिक्षा के विकास से सम्बन्धित राष्ट्रीय स्तर पर कुछ संस्थाएं कार्य कर रही है। इसके समन्वय व विकास की दृष्टि से 1961 में एक नवीन संस्था गठित की जिसे राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (National Council of Educational Research and Training) कहते है। स्वतंत्र संस्था के रूप में राष्ट्रीय शैक्षिक

*Corresponding Author: पूनम शर्मा

अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (N.C.R.T.) की स्थापना 1 सितम्बर 1961 को हुई। इसका मुख्यालय नई दिल्ली में है । नई आवश्यक्ताओं व आकाक्षाओं के प्रकाशन यह निरन्तर बढ़ती व बदलती रही है।

स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में "विकास" और "गुणात्मक" सुधार लाने की जिम्मेदारी सम्भालते हुए इसने अद्वितीय भूमिका निभाई है। यह उच्च शिक्षा के स्वरूप, पाठ्यक्रम मानदण्ड एवं मूल्यांकन तकनीक इत्यादि के निर्धारण में महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान करती है। विद्यालयों में पढाये जाने वाले विभिन्न विषयों के प्रशिक्षण की व्यवस्था करती है।

यह परिषद् शिक्षा नियोजन प्रशासन, साहित्य–निर्माण, आंकड़ो को इकट्ठा करना, और निर्देशन की व्यवस्था द्वारा शिक्षा का विकास करती है। इस परिषद् का शिक्षा क्षेत्र में पाठ्यक्रम को प्रभावी बनाने में भी अधिक भूमिका निभाई है।

परिषद् ने माध्यमिक शिक्षा के पाठयक्रम को इतना सक्षम बनाया है कि उसे उत्तीर्ण करने के बाद छात्र समाज में उचित रोजगार प्राप्त कर सफलतापूर्वक जीवन यापन कर सके और शिक्षित व्यक्तियों के रूप में सम्मान प्राप्त कर सके शिक्षा के इसी महत्व को देखते हुए आजादी के बाद भारत में अनेक बार माध्यमिक शिक्षा के पाठयक्रम में परिवर्तन किये गये है।

वर्तमान परिस्थितियों में यह आवश्यक है कि पाठ्यक्रम का निर्माण करते समय छात्रों के स्तर के पाठ्यक्रम में कई विषय शामिल किये गये जिन्हें अच्छी तरह समझने के लिए छात्रों को उचित समय नहीं मिल पाता है। इसलिए माध्यमिक स्तर का परीक्षा परिणाम आवश्यकतानुरूप नहीं रहता है।

1. साहित्य का पुनरावलोकन (Review of Literature)

संबंधित साहित्य के अध्ययन में उन्हीं शोध ग्रन्थों को लिया गया है जो पाठ्यक्रम से संबंधित हैं।

एस.एस. उप्पल, ने 1999 में महाराष्ट्र राज्य के सैकेण्डरी विद्यालयों में विज्ञान विषय के चल रहे पाठ्यक्रम के बारे में शोध कार्य किया। इस कार्य हेतु समकों के संकलन का कार्य प्रश्नावली विधि के माध्यम से किया गया। निर्मित प्रश्नावली का प्रशासन सैकेण्डरी विद्यालयों के अध्यापकों तथा छात्रों पर किया गया। प्राप्त समंकों का विशलेषण उचित सांख्यिकीय विधि से करने के उपरांत यह निष्कर्ष निकला–

(अ) वर्तमान में जो पाठ्यक्रम लागू है उसमें समय की आवश्यकता के अनुसार परिवर्तन होना चाहिए।

(ब) परिवर्तित पाठ्यक्रम में जो छात्रों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास से संबंधित तथ्यों को और जोड़ा जाना चाहिए।

एस.एन. गिरी, ने 1999 में महाराष्ट्र राज्य में माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग में गणित विषय के विद्यार्थियों के लिए उचित पाठ्यक्रम के विकास से संबंधित शोध कार्य किया। इस कार्य के लिये दत्त (Data) संकलन का कार्य राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की रिपोटों, जो कि पाठ्यक्रम विकास से जुड़ी है, के आधार पर किया गया। प्राप्त आँकड़ों का उचित सांख्यिकीय विधि से विश्लेषण करने के उपरांत निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए–

(अ) विज्ञान वर्ग के विधार्थियों के लिए संचालित पाठ्यक्रम में प्रायोगिक तथा सैद्धांतिक तथ्यों को सम्मिलित किया जाना चाहिए।

(ब) अध्यापकों के अभिनवन के लिए समय–समय पर राष्ट्रीय तथा प्रादेशिक स्तर पर शैक्षिक अभिनवन कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए।

(स) विकसित देशों जैसे यू.एस.ए., यू.के. तथा जापान में संचालित पाठ्यक्रमों, जो कि छात्रों की आवश्यकता पर आधारित होते हैं, की तरह ही भारत वर्ष में छात्रों की आवश्यकता पर आधारित पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाना चाहिए।

2. अनुसंधान की आवश्यकता व महत्त्व

किसी भी समस्या पर शोध करने से पूर्व यह देखना आवश्यक है कि विभिन्न दृष्टिकोणों से उस समस्या का हल कितना आवश्यक है? अर्थात् उस समस्या पर शोध कार्य मनुष्य में अपने चारों ओर के पर्यावरण को समझने की जिज्ञासा एवं चहूं ओर बिखरी समस्याओं के समाधान खोजने की प्रवृति होती है, इसी से वह परिस्थितियों को नियंत्रण में करके अपने मनोकूल सुविधानजनक वातावरण का निर्माण करता है। यह नवीन को जानने की जिज्ञासा व परिस्थितियों को नियमित एवं सुव्यवस्थित ढंग से समाधान खोजने के प्रयास को ही अनुसंधान कहते हैं। आजादी के पश्चात् भारत में शिक्षा के क्षेत्र में सुधार लाने के लिए पहला शिक्षा आयोग "राधा कृष्णन शिक्षा आयोगष बना, जिसका कार्य उच्च शिक्षा में सुधार करना था। इस आयोग ने अपना क्षेत्र उच्च शिक्षा को नहीं रखा, बल्कि माध्यमिक शिक्षा क्षेत्र में सुधार हेतु अपनी संस्तुतियां दी।

3. समस्या कथन (Problem Statement)

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध का शीर्षक श्माध्यमिक स्तर के राजकीय व गैर राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की एन. सी.ई.आर.टी. द्वारा संचालित पाठयक्रम के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययनश

तकनीकी शब्दाबली: पाठ्यक्रम–पाठयक्रम का समानार्थी अंग्रेजी शब्द "करीकुलम" है करीकुलम लैटिन भाषा का शब्द है । इसका अर्थ है–"दौड़ का मैदान" प्रसिद्व शिक्षा शास्त्री हार्न ने पाठ्यक्रम को इस प्रकार स्पष्ट किया है कि "शिक्षा की क्रिया के लिए चार वस्तुओं की आवश्यकता है विद्यार्थी, पाठयक्रम, शैक्षिक वातावरण तथा अध्यापक।"

माध्यमिक शिक्षा–स्वतन्त्रता के बाद माध्यमिक शिक्षा में सुधार करने हेतु माध्यमिक शिक्षा आयोग का गठन किया गया, जिसने इस सम्बन्ध में आने सुझावों को प्रस्तुत किया, सुझावों के फलस्वरूप हमारे देश में माध्यमिक शिक्षा का विस्तार अत्यन्त तीव्र गति से हुआ। माध्यमिक शिक्षा का वर्तमान स्वरूप अपने पीछे 150 वर्ष से अधिक की विकास यात्रा को लिये हुए है।

राजकीय विद्यालय–राज्य सरकार तथा केन्द्रीय सरकार द्वारा संचालित विद्यालय राजकीय विद्यालय की श्रेणी में आते है। ये सीधे राज्य के शिक्षा विभाग के अधीन होते है। इनमें अध्यापकों तथा कर्मचारियों की नियुक्तियां राज्य सरकार तथा केन्द्र सरकार के शिक्षा विभाग या प्रान्तीय लोक सेवा आयोग द्वारा की जाती है।

गैर राजकीय विद्यालय–भारत के निजी क्षेत्र में बहुत विद्यालय है। जाति, परिवार, व्यक्ति, समूह, संस्था औद्यौगिक घराने इत्यादि विभिन्न प्रकार के संचालक मण्डलों द्वारा इनका संचालन होता है। इन सभी विद्यालयों में शिक्षा सम्बन्धी वातवरण एक सा नहीं होता कई अंत सामान्य किस्म के है तो कई आधुनिक तथा अत्याधुनिक शैक्षिक वातावरण से युक्त होते है।

अभिवृत्तिः अभिवृत्ति एक सामाजिक प्रत्यय एवं मानसिक पहलू है इसका संबंध सामाजिक परिस्थितियों में व्यक्ति व्यवहार के मानसिक पक्ष से होता है। अतएवं इसके माध्यम से व्यक्ति विशेष के व्यवहार का अध्ययन संभव होता है।

4. शोध मे प्रयुक्त उपकरण

किसी समस्या के अध्ययन हेतु परिकल्पना की रचना के पश्चात् नवीन एवं अज्ञात प्रदत्त एकत्रित करने के लिए अनेक विधियाँ प्रयुक्त की जाती हैं। प्रत्येक मापन विधि एक विशेष प्रकार के प्रदत्तों के संकलन का स्रोत होती है। एक सफल अनुसंधान के लिए उपयुक्त उपकरणों के चयन का अत्यधिक महत्व होता है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए शोधकर्ता भिन्न–भिन्न उपकरणों का प्रयोग करते हैं। शोधकर्ता को इन उपकरणों की प्रकृति, गुण–दोषों एवं उनकी विश्वसनीयता एवं वैद्यता आदि से भंली प्रकार परिचित होना चाहिये। प्रस्तुत शोध में आँकड़ों के संग्रहण एंव विभिन्न चरों के मापन हेतु मापनी प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है, जिसके द्वारा प्राप्त उत्तरों के आधार पर शोध सांख्यिकी संगणनायें की गयी हैं–

माध्यमिक स्तर के राजकीय व गैर राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा संचालित पाठयक्रम के प्रति अभिवृत्ति अध्ययन मापनी प्रश्नावली

प्रतिदर्श का प्रारूप एवं प्रतिचयन विधिः न्यादर्श की दृष्टि से प्रस्तुत लघुशोध प्रबन्ध में न्यायदर्श के रूप में श्री गंगानगर जिले की गंगानगर तहसील के माध्यमिक स्तर के राजकीय व गैर राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों को सम्मलित किया गया है ।

5. शोध के उद्देश्य

अनुसंधान कार्य करने से पहले उद्देश्यो का निर्धारण करना अत्यन्त आवश्यक होता है । क्योंकि यही अनुसंधान में दिशा निर्देशन का कार्य करते है। अनुसधानकर्ता ने अपने लघुशोध में निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्धारण किया है।

1. माध्यमिक स्तर के राजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापको की एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा संचालित पाठ्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा संचालित पाठ्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के राजकीय व गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा संचालित पाठ्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

6. शोध परिकल्पना

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्यों के अन्तर्गत निर्मित उद्देश्यों की परिकल्पनायें प्रस्तुत की गयी हैं। परिकल्पनाएँ निम्न प्रकार है–

1. माध्यमिक स्तर के राजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापको की एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा संचालित पाठ्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति औसत स्तरीय है।
2. माध्यमिक स्तर के गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा संचालित पाठ्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति औसत स्तरीय है।
3. माध्यमिक स्तर के राजकीय व गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा संचालित पाठ्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

आंकड़ो का विशलेषण

प्रस्तुत लघु शोध में क्षेत्र व लिंग की दृष्टि से न्यादर्श का विभाजन निम्न प्रकार से किया गया–

1. **माध्यमिक स्तर के राजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा संचालित पाठ्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति औसत स्तरीय है।**

सारणी 1: राजकीय विद्यालय के अध्यापक

विद्यालय	N (संख्या)	उच्च	मध्य	निम्न	परिणाम
राजकीय विद्यालय अध्यापक	15	4	9	2	उच्च स्तरीय

उपरोक्त सारणी संख्या 1 में माध्यमिक स्तर के राजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा संचालित पाठ्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति संबंधी दत्तों को विश्लेषित कर दर्शाया गया है, जिसमें राजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की संख्या 15 हैं, इसमें उच्च स्तर में 4 अध्यापक, मध्य स्तर में 9 अध्यापक व निम्न स्तर में 2 अध्यापक पाये गये। अतः परिणाम स्वरूप कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के राजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा संचालित पाठ्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति का परिणाम उच्च स्तरीय है। अतः इस आधार पर शोधकर्ता द्वारा निर्मित परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है, और कहा जाता है कि माध्यमिक स्तर के राजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा संचालित पाठ्यक्रम

के प्रति अभिवृत्ति औसत स्तरीय नहीं वरन् उच्च स्तरीय है।

2. माध्यमिक स्तर के गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा संचालित पाठ्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति औसत स्तरीय है।

सारणी 2: गैर राजकीय विद्यालय के अध्यापक

विद्यालय	N (संख्या)	उच्च	मध्य	निम्न	परिणाम
गैर राजकीय विद्यालय अध्यापक	15	6	9	0	उच्च स्तरीय

उपरोक्त सारणी संख्या 2 में माध्यमिक स्तर के गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की एन.सी.ई. आर.टी. द्वारा संचालित पाठ्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति संबंधी दत्तों को विश्लेषित कर दर्शाया गया है, जिसमें गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की संख्या 15 है। इसमें उच्च स्तर में 6, मध्य स्तर में 9 व निम्न स्तर के अन्तर्गत 0 अध्यापक पाये गये हैं। अतः परिणाम स्वरूप कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की एन.सी.ई. आर.टी. द्वारा संचालित पाठ्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति का परिणाम उच्च स्तरीय है, अतः इस आधार पर शोधकर्ता द्वारा निर्मित परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है और कहा जाता है कि माध्यमिक स्तर के गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा संचालित पाठ्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति औसत स्तरीय नहीं वरन् उच्च स्तरीय है।

3. माध्यमिक स्तर के राजकीय व गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा संचालित पाठ्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी 3: राजकीय व गैर राजकीय विद्यालयों के अध्यापक विद्यालय

विद्यालय	N (संख्या)	मध्यम मान	मानक विचलन	T मूल्य	परिणाम
राजकीय विद्यालय के अध्यापक	15	200.6	9.30	0.69	सार्थक अन्तर नहीं
गैर राजकीय विद्यालय के अध्यापक	15	202.7	7.05		

उपरोक्त सारणी संख्या 3 में माध्यमिक स्तर के राजकीय व गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की एन. सी.ई.आर.टी. द्वारा संचालित पाठ्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति संबंधी दत्तों को विश्लेषित कर दर्शाया गया है। जिसमें राजकीय विद्यालयों में कार्यरत 15 अध्यापकों की अभिवृत्ति संबंधी प्राप्तांकों को लिया गया है। जिनका मध्यमान 200. 6 तथा मानक विचलन 9.30 रहा है। इसी प्रकार गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत 15 अध्यापकों की अभिवृत्ति संबंधी प्राप्तांकों को लिया गया है, जिनका मध्यमान 202.7 तथा मानक विचलन 7.05 आ रहा है। अतः राजकीय व गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के प्राप्तांकों के आधार पर टी–मूल्य 0.69 प्राप्त हुआ।

इसलिए परिणाम स्वरूप कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के राजकीय व गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा संचालित पाठ्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

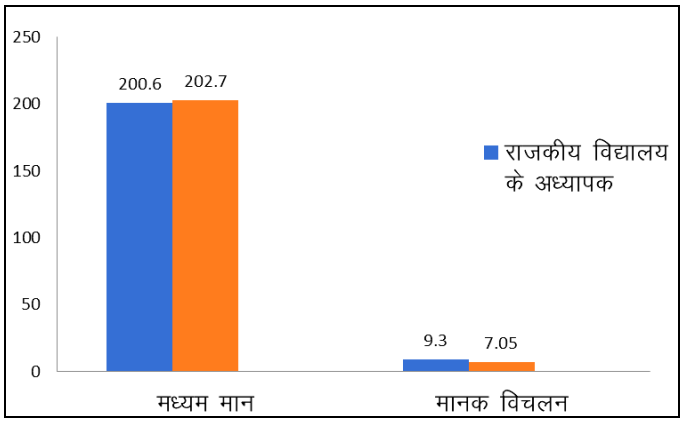

रेखाचित्र 1: राजकीय व गैर राजकीय विद्यालयों के अध्यापकों की अभिवृत्ति का स्तर

7. निष्कर्ष

मानव जीवन में कोई भी कार्य मानव द्वारा किया जायें, वह तब तक पूर्ण नहीं माना जाता है जब तक कि उसका कोई सार्थक परिणाम निकलकर न आ जाये। यह परिणाम सकारात्मक तथा नकारात्मक किसी भी प्रकार का हो सकता है। किसी भी कार्य का सकारात्मक परिणाम उस कार्य को प्रतिपुष्टि प्रदान करता है। जिस प्रकार शिक्षण की प्रक्रिया में छात्रों को सकारात्मक प्रतिपुष्टि प्रदान की जाय तो छात्रों को अधिकतम अधिगम होता है और यह अधिगमकर्ता के मस्तिष्क में स्थायी रूप ग्रहण कर लेता है। प्रस्तुत अनुसंधान–कार्य में अनुसंधानकर्त्री ने परिकल्पनाओं के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किए है–

परिकल्पना

1. **"माध्यमिक स्तर के राजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा संचालित पाठ्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति औसत स्तरीय है।":** प्रस्तुत शोध की परिकल्पना संख्या 1 में प्राप्त आकड़ो की सांख्यिकीय गणना के आधार पर अनुसंधानकर्त्री ने यह निष्कर्ष निकाला कि माध्यमिक स्तर के राजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की एन.सी.

ई.आर.टी. द्वारा संचालित पाठ्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति औसत स्तरीय नहीं बल्कि उच्च स्तरीय है।

एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा संचालित माध्यमिक स्तर का पाठ्यक्रम विषय विशेषज्ञों द्वारा समाजिक आवश्यकताओ, मूल्यों, लक्ष्यों तथा उदश्यों को ध्यान में रखकर किया गया है तथा सभी विद्यालयों (शहरी व ग्रामीण) में समान रूप से चलाया गया है। इस पाठ्यक्रम को अनुभवी अध्यापक–अध्यापिकाओं द्वारा छात्र–छात्राओं (शहरी व ग्रामीण) को पढाया जाता है। इससे शिक्षा के क्षेत्र में नवीन जानकारी प्राप्त होती है। इससे विकास की गती तेज हुई है।

2. **"माध्यमिक स्तर के गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा संचालित पाठ्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति औसत स्तरीय है"**: प्रस्तुत शोध की परिकल्पना संख्या 2 में प्राप्त आकड़ो की सांख्यिकीय गणना के आधार पर अनुसंधानकर्त्री ने यह निष्कर्ष निकाला कि माध्यमिक स्तर के गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा संचालित पाठ्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति औसत स्तरीय नहीं बल्कि उच्च स्तरीय है।

एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा संचालित माध्यमिक स्तर का पाठ्यक्रम विषय विशेषज्ञों द्वारा समाजिक आवश्यकताओ, मूल्यों, लक्ष्यों तथा उद्देश्यों को ध्यान में रखकर किया गया है तथा सभी विद्यालयों (शहरी व ग्रामीण) में समान रूप से चलाया गया है। इस पाठ्यक्रम को अनुभवी अध्यापक–अध्यापिकाओं द्वारा छात्र–छात्राओं (शहरी व ग्रामीण) को पढाया जाता है । इससे शिक्षा के क्षेत्र में नवीन जानकारी प्राप्त होती है। इससे विकास की गती तेज हुई है।

3. **"माध्यमिक स्तर के राजकीय व गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा संचालित पाठ्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"**: प्रस्तुत शोध की परिकल्पना संख्या 3 में प्राप्त आकड़ो की सांख्यिकीय गणना के आधार पर अनुसंधानकर्त्री ने यह निष्कर्ष निकाला कि माध्यमिक स्तर के राजकीय व गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा संचालित पाठ्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। इसमें प्राप्तांको का मध्यमान 200.6 व 202.7 मानक विचलन 9.30 व 7.05 तथा इन प्राप्ताको के आधार पर टी–मूल्य 0.69 प्राप्त हुआ जो सार्थक अन्तर नहीं दर्शा रहा है। विद्यालयों में कार्यरत अध्यापिकाओं की अभिवृत्ति औसत स्तरीय नहीं बल्कि उच्च स्तरीय है।

एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा संचालित माध्यमिक स्तर का पाठ्यक्रम विषय विशेषज्ञों द्वारा समाजिक आवश्यकताओ, मूल्यों, लक्ष्यों तथा उदश्यों को ध्यान में रखकर किया गया है तथा सभी विद्यालयों (शहरी व ग्रामीण) में समान रूप से चलाया गया है। इस पाठ्यक्रम को अनुभवी अध्यापक–अध्यापिकाओं द्वारा छात्र–छात्राओं (शहरी व ग्रामीण) को पढाया जाता है। इससे शिक्षा के क्षेत्र में नवीन जानकारी प्राप्त होती है। इससे विकास की गती तेज हुई है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. अग्निहोत्री, रविन्द्र, "आधुनिक भारतीय शिक्षा समस्याएं और समाधान"
2. कपिल, एच.के.,"अनुसंधान विधियां" एच.पी. भार्गव बुक हाऊस, जयपुर तेहरवां संस्करण
3. गेरट, एच.ई. (1989),"स्टेटिक्स इन साइक्लोजी एण्ड एजूकेशन" कल्याणी पब्लिशर्स, ग्यारहवां संस्करण
4. वर्मा, जे.पी. (2005) "शैक्षिक प्रबंध" राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर द्वितीय संस्करण
5. सरीन एण्ड सरीन, "शैक्षिक अनुसंधान विधियां" अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा तृतीय संस्करण, 2005
6. श्री वास्तव, नंदिन, "शैक्षिक अनुसंधान विधियां ष्दीनदयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, आगरा कुमार, अशोकष्शैक्षिक शोध की पद्धतियां" विश्वविद्यालय प्रकाशन, जयपुर